गगास

द्विमासिक ई पत्रिका

उत्तराखण्ड शासन

अंक-10

डॉ0 प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण (अल्मोड़ा)

अप्रैल-मई 2026

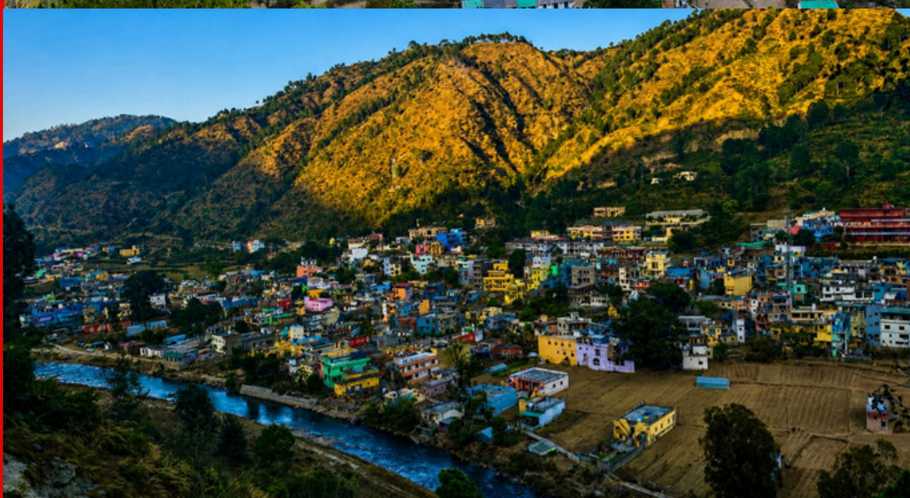

"Look deep into nature, and then you will understand everything better."
Albert Einstein

सम्पादक मण्डल

सम्पादक- डॉ० इन्दिरा , असि० प्रो० भौतिक विज्ञान

तकनीकी संपादक - डॉ० परितोष उप्रेती, असि० प्रो० भूगोल

सहसम्पादक- डॉ० दीपा लोहनी , असि० प्रो० इतिहास

छात्रा सम्पादक- निशा रावत, बी०ए० षष्ठम् सेमेस्टर

छात्र सम्पादक- सुमित बिष्ट, बी०ए० षष्ठम् सेमेस्टर

तकनीकी सहयोग- श्री पूरन सिंह जलाल

सलाहकार- 1- डॉ० इला बिष्ट, असि० प्रो० समाजशास्त्र
2- डॉ० सुभाष चन्द्र आर्य, असि० प्रो० हिन्दी

आवरण- 1- डॉ० परितोष उप्रेती, असि० प्रो० भूगोल
2- डॉ० इन्दिरा, असि० प्रो० भौतिक विज्ञान

प्राचार्य एवं संरक्षक

प्रो० शर्मिला सक्सेना,
प्राचार्य, राजकीय महाविद्यालय, भिकियासैंण (अल्मोड़ा)

विषयानुक्रमणिका

01- शुभकामना संदेश

02- सम्पादकीय

03- विद्यार्थियों की कलम से

04- अतिथि की कलम से

06- उपलब्धियां

07- सुर्ख़ियों में महाविद्यालय

08- मीमांसा

09- महाविद्यालय परिवार

10- इनफॉरमेशन डेस्क

सरदार भगत सिंह राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
रुद्रपुर, ऊधम सिंह नगर, उत्तराखण्ड

शुभकामना सन्देश

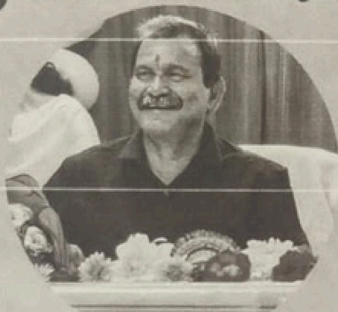

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजकीय महाविद्यालय, भिकियासैंण (अल्मोड़ा) अपनी द्विमासिक ई-पत्रिका ' "गगास" का 10वाँ अंक प्रकाशित करने जा रहा है। महाविद्यालय की ई-पत्रिका न केवल छात्र-छात्राओं की अभिव्यक्ति का माध्यम होगी, बल्कि इसके माध्यम से राष्ट्र निर्माण, क्षेत्र एवं राज्य संस्कृति, जीवन मूल्य, वैज्ञानिक प्रगति, सांस्कृतिक व नैतिक मूल्य, प्राकृतिक सौंदर्य एवं पर्यावरण आदि के सम्बन्ध में उनके विचारों की दशा की प्रत्यक्ष एवं परोक्ष अभिव्यक्ति भी होगी।

हम सब बुद्धिजीवी एवं सामाजिक प्राणी है। हमारी सोच, हमारा चिंतन एवं कर्तव्य जब तक समाज हित में नहीं होता है, तब तक विकसित राष्ट्र की कल्पना व्यर्थ है। एक सुदृढ़ एवं सशक्त राष्ट्र के निर्माण में हम तभी अपना योगदान सक्रिय रूप में दे सकेंगे, जब हम अपने मनोबल और अंतः स्फूर्ति को बनाए रखेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि ई-पत्रिका "गगास" के माध्यम से महाविद्यालय के विद्यार्थी एवं शिक्षक अपनी रचनात्मक, कलात्मक एवं विकासात्मक गतिविधियों को नई ऊँचाई पर ले जायेंगे। ई-पत्रिका "गगास" के 10वें अंक के प्रकाशन हेतु सम्पादक एवं सम्पादक मण्डल, छात्र-छात्राओं तथा शिक्षकों को मेरी तरफ से हार्दिक शुभकामनाएँ।

दिनाँक: 09.06.2026
स्थान: रुद्रपुर, ऊधम सिंह नगर

09.06.2026

(डॉ. अवधेश नारायण सिंह)
प्राचार्य

शुभकामना सन्देश

मैं डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय, भिकियासेन द्वारा प्रकाशित की जा रही द्विमासिक ई–पत्रिका 'गगास' के अंक–10 के प्रकाशन पर महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

यह पत्रिका विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं पाठकों के लिए ज्ञान, विचार और सृजनात्मक अभिव्यक्ति का एक महत्वपूर्ण मंच है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसमें प्रकाशित विविध विषयों पर आधारित लेख, रचनाएँ एवं विचार पाठकों को नवीन दृष्टिकोण प्रदान करेंगे तथा उनके ज्ञानवर्धन एवं व्यक्तित्व विकास में सहायक सिद्ध होंगे।

पत्रिका के लेखकों एवं योगदानकर्ताओं ने अपने अनुभव, अध्ययन और चिंतन को अत्यंत सारगर्भित रूप में प्रस्तुत किया है। निस्संदेह, यह अंक पाठकों के लिए प्रेरणादायक एवं उपयोगी सिद्ध होगा तथा उन्हें बौद्धिक रूप से समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

अन्त में, मैं पत्रिका के सफल संपादन एवं प्रकाशन हेतु संपादक मंडल तथा समस्त महाविद्यालय परिवार को पुनः हार्दिक बधाई देता हूँ और महाविद्यालय की निरंतर उन्नति, प्रगति एवं उत्कृष्टता की मंगलकामना करता हूँ।

'बाला दत्त पपन्ने'
प्रवक्ता (सेवानिवृत्त)
राजकीय इंटर कॉलेज,
नौला,
भिकियासेन (अल्मोड़ा)

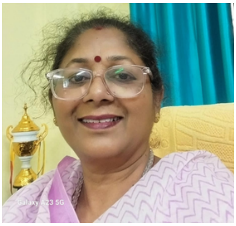

प्राचार्य का संदेश

प्रो0 (डा0) शर्मिला सक्सेना

द्विमासिक ई–पत्रिका 'गगास' के माध्यम से संपादक मंडल द्वारा छात्र–छात्राओं को रचनात्मक अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करने का सराहनीय कार्य सतत रूप से किया जा रहा है इसके लिए उन्हें साधुवाद एवं शुभकामनाएँ।

विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में पत्र–पत्रिकाएँ बेहद अहम भूमिका निभाती है और महाविद्यालय की पत्र–पत्रिकाएँ उन्हें जीवन भर पठन -पाठन से सतत जुड़े रहने की प्रेरणा प्रदान करती है। ना जाने कितने सुगंधित पुष्पों के सुप्त बीज सुअवसर पाते ही पुष्पित और पल्लवित हो उठते हैं।

महाविद्यालय परिवार का यह प्रयास सार्थक हो, अनवरत रहे। इसी सुखद कामना के साथ...

प्रो0 (डा0) शर्मिला सक्सेना

सम्पादकीय

डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण,अल्मोड़ा के संरक्षण में प्रकाशित होने वाली द्विमासिक ऑनलाइन पत्रिका 'गगास' का दशम अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है।यह पत्रिका महाविद्यालय में कार्यरत प्राध्यापकों एवं अध्ययनरत छात्र-छात्राओं की रचनात्मकता एवं विचाराभिव्यक्ति का मंच है।यह पत्रिका ठीक उसी प्रकार प्राध्यापकों एवं छात्रों के लिए नवाचार एवं नवचिंतन की धारा की सृजक और पोषक सिद्ध हो रही है जैसे 'गगास' नदी की निर्मल धारा भिकियासैंण सहित अपने प्रवाह मार्ग के समीपवर्ती भू-भाग एवं वहां निवासरत लोगों को जीवन एवं सृजन का संदेश देती है।

'गगास' केवल पत्रिका ही नहीं अपितु हमारे महाविद्यालय परिवार की सांस्कृतिक चेतना,बौद्धिक अभिव्यक्ति,सहगामी क्रियाओं एवं महाविद्यालय परिवार की उपलब्धि को जन-जन तक पहुंचाने का एक सशक्त माध्यम है। यह उन विचारों एवं नव चिंतन की संगम स्थली है,जिसका दायरा पाठ्यपुस्तकों से कहीं अधिक समाज एवं जीवन के विविध आयामों को स्पर्श करना है।

' गगास' पत्रिका का यह अंक महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना के कुशल मार्गदर्शन,संपादकीय टीम के विद्वतापूर्ण अथक परिश्रम तथा इसमें प्रकाशित आलेख एवं सूचना प्रकाशित करने में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप में विभिन्न प्राध्यापकों एवं छात्रों के द्वारा किए गए सहयोग का प्रतिफल है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह पत्रिका सभी पाठकों को ज्ञान,सामाजिकता,संवेदना, सृजनशीलता एवं कल्पनाशीलता की एक ऐसी धारा से अवगत कराएगी,जो उन्हें अपने अंदर छिपी प्रतिभा को पन्नों पर दर्ज करने तथा नवाचार की लहर में योगदान करने के लिए अभिप्रेरित करेगी।

सह संपादक
डॉ. दीपा लोहनी
प्रभारी,इतिहास विभाग
डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय
भिकियासैंण, अल्मोड़ा

The Rich Culture of Kumaon: Traditions, Attire, Food, and Folk Dance

Kumaon, a beautiful region of Uttarakhand in northern India, is famous for its rich cultural heritage, traditional attire, delicious cuisine, and vibrant folk arts. Surrounded by the majestic Himalayas, Kumaon has preserved its unique customs and traditions for centuries. The culture of Kumaon reflects simplicity, spirituality, and a deep connection with nature.

One of the most important symbols of Kumaoni culture is the Pichora, a traditional yellow and red-colored cloth worn by married women during religious ceremonies, weddings, and other auspicious occasions. It is considered a symbol of prosperity, purity, and marital happiness. The beautiful designs and sacred motifs printed on the Pichora make it an important part of Kumaoni identity and tradition.

Kumaon is also known for its delicious traditional sweets. Bal Mithai, which originated in Almora, is one of the most famous sweets of the region. It is made from roasted khoya and coated with small white sugar balls, giving it a unique taste and appearance. Another popular sweet is Singori, prepared from khoya and wrapped in the leaves of the Malu plant. Its natural aroma and rich flavor make it a favorite among locals and tourists alike.

Folk music and dance are essential parts of Kumaoni culture. Jhora is one of the most popular traditional folk dances of Kumaon. Men and women perform this dance together by forming a circle and moving rhythmically to the beats of traditional musical instruments. Jhora is commonly performed during fairs, festivals, and social gatherings, promoting unity, joy, and community spirit.

The culture of Kumaon is a beautiful blend of traditions, customs, art, music, and cuisine. Traditional attire like the Pichora, famous sweets such as Bal Mithai and Singori, and folk dances like Jhora continue to keep the cultural heritage of Kumaon alive. It is the responsibility of the younger generation to preserve and promote these valuable traditions for future generations.

Kumaoni culture represents the soul of Uttarakhand. Its colorful traditions, unique food, and vibrant folk arts showcase the rich heritage of the region. By understanding and respecting these traditions, we can ensure that the cultural identity of Kumaon remains strong and continues to inspire future generations.

सुमित बिष्ट
बी०ए० षष्ठम् सेमेस्टर

THE ART OF DISCONNECTING

"Finding Yourself in a World That Never Logs Off"

"One day you'll realize that the moments you were looking for were happening while you were looking at your phone."

ज़रा एक पल रुककर सोचिए। आख़िरी बार आपने बिना उसकी तस्वीर खींचे सूर्यास्त कब देखा था? आख़िरी बार आप अपने परिवार के साथ बिना बार-बार मोबाइल देखने के कब बैठे थे? आख़िरी बार आप अपने विचारों के साथ अकेले कब टहले थे? शायद हममें से बहुतों को इसका जवाब याद भी न हो, क्योंकि ऐसे पल अब धीरे-धीरे हमारी ज़िंदगी से गायब होते जा रहे हैं।

हम एक ऐसी दुनिया में जी रहे हैं जो कभी लॉग ऑफ नहीं होती। हमारी सुबह मोबाइल की सूचनाओं से शुरू होती है और रातें अंतहीन स्क्रॉलिंग में बीत जाती हैं। सोशल मीडिया, रील्स, संदेश, ई-मेल और अनगिनत अपडेट हर पल हमारा ध्यान अपनी ओर खींचने की कोशिश करते हैं। तकनीक ने निस्संदेह जीवन को आसान बनाया है। आज हम अपनी जेब में रखे एक छोटे-से उपकरण से सीख सकते हैं, संवाद कर सकते हैं, काम कर सकते हैं और मनोरंजन प्राप्त कर सकते हैं। लेकिन इस दौड़ में कहीं न कहीं हम वर्तमान में जीना भूलते जा रहे हैं। आज के समय में जहाँ दुनिया बस एक क्लिक की दूरी पर है, वहीं सच्ची उपस्थिति एक दुर्लभ चीज़ बनती जा रही है। हम स्क्रीन से जुड़े रहते हैं, लेकिन धीरे-धीरे स्वयं से, अपने विचारों से और अपने आसपास के लोगों से दूर होते जा रहे हैं।

रील्स, पोस्ट और नोटिफिकेशनों की इस अंतहीन धारा में समय कब फिसल जाता है, इसका पता ही नहीं चलता। इसकी सबसे बड़ी कीमत केवल समय का खो जाना नहीं है, बल्कि ध्यान, आत्मचिंतन और जीवन के उन खूबसूरत अनुभवों का खो जाना है जो हमें भीतर से समृद्ध बनाते हैं।

दार्शनिक हेनरी डेविड थोरो ने एक बार कहा था—

"Men have become the tools of their tools."
यद्यपि यह विचार स्मार्टफोन के अस्तित्व में आने से बहुत पहले व्यक्त किया गया था, फिर भी आज यह आश्चर्यजनक रूप से प्रासंगिक लगता है। तकनीक का निर्माण मानव की सेवा के लिए हुआ था, लेकिन आज कई बार ऐसा महसूस होता है कि हम ही तकनीक की सेवा में लगे हुए हैं। जिन उपकरणों को हमने नियंत्रित करने के लिए बनाया था, वही अब हमारी आदतों, हमारे ध्यान और कभी-कभी हमारी भावनाओं को भी नियंत्रित करने लगे हैं।

कभी-कभी मन उन सुनहरी बचपन की यादों में लौट जाता है। गर्मियों की छुट्टियों में नानी के घर जाना, पूरे साल उन छुट्टियों का इंतज़ार करना, सुबह से शाम तक बिना किसी चिंता के खेलना, और रात को छत पर लेटकर तारों और चाँद को निहारना। मुझे आज भी याद है कि मैं अक्सर सोचती थी कि चाँद मेरे साथ-साथ चल रहा है। अँधेरे में जुगनुओं के पीछे भागना, उन्हें पकड़ने की कोशिश करना, और दोस्तों के साथ पकड़म-पकड़ाई, चोर-पुलिस, पिट्ठू, निंजा वॉरियर और "आजा मेरी सोन परी" जैसे खेल खेलते-खेलते समय का पता ही नहीं चलता था। तब न कोई नोटिफिकेशन था, न किसी स्क्रीन की चमक और न ही हर पल को तस्वीरों में कैद करने की जल्दी। हमारी दुनिया छोटी थी, लेकिन शायद उसी वजह से ज़्यादा खूबसूरत थी। हम हर पल को रिकॉर्ड नहीं करते थे, क्योंकि हम उसे पूरी तरह जी रहे होते थे।

आज पीछे मुड़कर देखती हूँ तो लगता है कि वे यादें इसलिए इतनी सुंदर नहीं हैं क्योंकि उनमें कुछ असाधारण था, बल्कि इसलिए क्योंकि उन पलों में मेरा ध्यान कहीं और नहीं भटकता था। मैं सचमुच उन्हें जीती थी।

फ्रांसीसी दार्शनिक सिमोन वील ने कहा था—
"Attention is the rarest and purest form of generosity."

ध्यान केवल एक मानसिक क्षमता नहीं है, बल्कि यह हमारे स्नेह और सम्मान की अभिव्यक्ति भी है। जब हम किसी मित्र की बात पूरे मन से सुनते हैं, किसी पुस्तक में पूरी तरह डूब जाते हैं या बिना किसी व्यवधान के बातचीत का आनंद लेते हैं, तब हम अपना एक हिस्सा उस अनुभव को समर्पित करते हैं। लेकिन डिजिटल दुनिया की लगातार आने वाली बाधाएँ हमें ऐसा करने से रोकती रहती हैं।

डिस्कनेक्ट होने का अर्थ तकनीक को त्यागना नहीं है। इसका अर्थ केवल इतना है कि हम तकनीक के साथ एक स्वस्थ संबंध बनाएँ। इसका अर्थ है यह समझना कि हर नोटिफिकेशन हमारे ध्यान का हकदार नहीं होता और हर पल को सोशल मीडिया पर साझा करना आवश्यक नहीं है। कई बार हम जीवन को रिकॉर्ड करने में इतने व्यस्त हो जाते हैं कि उसे जीना ही भूल जाते हैं।

प्राचीन यूनानी दार्शनिक सुकरात ने कहा था—
"The unexamined life is not worth living."

उनके शब्द हमें याद दिलाते हैं कि एक सार्थक जीवन को फॉलोअर्स, नोटिफिकेशनों या स्क्रीन टाइम से नहीं आँका जा सकता। उसका मूल्य हमारी जागरूकता, हमारे संबंधों और हमारे आसपास की दुनिया को वास्तव में अनुभव करने की क्षमता से निर्धारित होता है।

अंततः, डिस्कनेक्ट होने की कला दुनिया से भागने के बारे में नहीं है, बल्कि उसके पास लौटने के बारे में है। ऐसी दुनिया में जो कभी लॉग ऑफ नहीं होती, कुछ समय के लिए स्वयं को तकनीक से अलग कर लेना साहस का कार्य है। यह हमें अपना ध्यान वापस पाने, अपने मानसिक सुकून की रक्षा करने और साधारण क्षणों में छिपी सुंदरता को फिर से खोजने का अवसर देता है।

क्योंकि कभी-कभी सबसे महत्वपूर्ण जुड़ाव इंटरनेट की दुनिया से नहीं, बल्कि उस जीवन से होता है जो हमारे आसपास चुपचाप घटित हो रहा होता है।

अंकिता बिष्ट
बी. ए. द्वितीय सेमेस्टर

अतिथि की कलम से

लोक साहित्य और शास्त्रीय संगीत एक अनुशीलन

लोक साहित्य में आने वाली विधा इसके लोकगीत हैं,ये लोकगीत स्वस्फूर्त और स्वतंत्र रूप से गेय होते हैं,उन लोक गीतों की लय,धुन परम्परागत रूप से निश्चित होती है।लोकगीतों में (रंगतें, रागों के सुर,रागांश) प्राकृतिक रूप से पाए जाते हैं। ये सुनने में बहुत कर्णप्रियता लिए हुए होते हैं। कनउजी क्षेत्र में ऐसी बहुत सी रंगतें हैं जो आज स्वतंत्र रूप से रागात्मकता लिए हुए हैं। लोक साहित्य के अन्तर्गत आने वाली विधा लोक गीत से संगीत शास्त्रियों को कच्चा माल उपलब्ध होता है। संगीत का आधार स्वर,और निश्चित आरोहावरोह है,नियम हैं।

संगीत निजी अभिव्यक्ति के लिए एक ऐसी सहजवृत्यात्मक स्वतन्त्रता की मांग करता है, जो शिष्ट समाज में संकोच और अनुशासन के कारण दबी रहती है। लोक में यह सहजवृत्ति प्रबल और स्वतंत्र होती है।अत: संगीत अपने अभिनव रूपों में यही अभिव्यक्ति पाता रहता है। लोक की अधिकांश अभिव्यक्तियां आज रागों का रूप ले चुकीं हैं। पं कुमार गन्धर्व ने तो लोकगीतों से शास्त्रीय संगीत का ऐसा संसार सजाया कि आज तक मानक बने हुए हैं ।

राजस्थान की मांड आज १५-१६ तरह की प्रचलित है,और संगीत में मांड राग बन गया है। इसी प्रकार अहीरी भैरव,अहीरों की रंगत थी जो आज रागों का रूप ले चुकी है। भटियार सरायों में रहने वालीं भटियारिनों की लोकरंगत थी जिसको गाकर वे यात्रियों को जगातीं थीं,जो संगीत राग भटियार बन गया, अर्थात लोक रंगतें ही लोक से हटकर शास्त्रीय संगीत में राग नाम लेकर सहजवृत्ति का साधन बनी हुईं हैं।

राग कलिंगडा, मारू,मारू विहाग,पहाड़ी,सिन्ध भैरवी,जोगिया,वैरागी, बंगाल भैरव,नट भैरव, आदि राग भी लोक से निकल कर संगीत में जाकर वह स्थान पा गये जिनको सीखने के लिए साधना करनी पड़ती है। पहाडी क्षेत्रों की लोक रंगतें भी अपने आप में अद्वितीय हैं,जैसे पहाडों की लोक रंगत से पहाडी राग उत्पन्न हुआ,इसी प्रकार पहाडों में विशेषकर उत्तराखण्ड (उत्तराञ्चल) में परम्परागत संगीतजीवी समाजों (औजी वादकों) के गायन- वादन में रागों और तालों की छटा सुनाई/ दिखाई देती है।

औजी वादकों का अस्तित्व भी खतरे में है। लोकनाट्य कौथिक में भी भरत के नाट्यशास्त्र के चारों भावों(कायिक,वाचिक,आहार्य,सात्विक) का प्रदर्शन और रागों का निर्वहन होता है। विशेषकर देश, दुर्गा,भैरवी,पहाडी रागों की छटा देखते,सुनते बनती है। मशक बीन के अलबेले सुरों की रंगत तो मदहोशी ला देती है।कनउजी क्षेत्र की इतनी कर्ण प्रिय लोक धुनें हैं,जिनसे अद्भुत संसार का निर्माण होता है। कनउजी क्षेत्र में संगीत जीवी समाजों ने तो लोक और संगीत को प्राण- पण से सजाया है ।

यहां के कर्ण प्रिय दादरे,भजन, और अन्य लोकगीतों ने शास्त्रीय संगीत को अथाह कच्चा मार उपलब्ध करवाया है। इस क्षेत्र के संगीत जीवी समाजों में परम्परागत रूप से लोक संगीत को सहेजने वाले समाज,नट,बेड़िया,ब्रजवासी,कथक, राधा,नागर,हैं जिनके पास एक ओर शास्त्रीय संगीत की थाती तो दूसरी ओर लोकगीतों की विरासत है।इनके गांव तक इस क्षेत्र में हैं ,इसी प्रकार तिर्वा प्रखण्ड के अन्तर्गत आने वाला गांव बलपुरवा जो संसार के मानचित्र पर मशहूर हुआ,यहीं की पद्मश्री गुलाब बाई, जिन्होंने यहां के दादरों को सांगीत (नौटंकी) के मंचों से क्या गाया?

उनके दादरे "नदी नारे न जाउ श्याम पैंया परूं"
"पान खाय सैंयां हमारो!" फिल्मों में भी गाए गये और हिट भी हुए। दुर्भाग्य यह है कि ऐसे समाजों को हम अन्त्यज मानकर हाशिए पर छोड़कर आगे बढ़ गये। इसी प्रकार पीलीभीत के उपनगर बीसलपुर की राधा रानी, और शान्तिबाई श्रीमती शकुन्तला देवी भी जानी-मानी सांगीत हीरोइनें है जिन्होंने कनउजी भाषा व लोक संगीत को जीवित रखा। वहीं शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में फर्रुखाबाद घराना(गायन,वादन,नृत्य) प्रसिद्ध हुआ।

आवश्यकता इस बात की है कि ऐसे समाजों की धरोहर को सहेजा जाना चाहिए,जिससे कनउजी लोक संगीत संरक्षण हो सके।

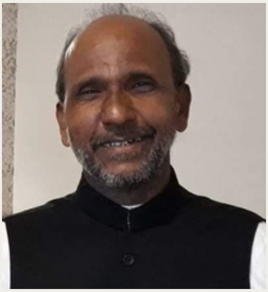

डॉ बीरेंद्र कुमार चन्द्रसखी
मैनपुरी

उपलब्धियाँ

माह-अप्रैल 2026

दिनांक- 2 अप्रैल 2026
महाविद्यालय में ऑड दिवस का आयोजन।

07 अप्रैल 2026

महाविद्यालय में प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन।

07 अप्रैल 2026
महाविद्यालय के दो दिवसीय वार्षिक क्रीड़ा समारोह का शुभारंभ।

दिनांक- 11अप्रैल 2026

भिकियासैंण, बनबसा, मीठीबेरी, बिध्याणी राजकीय महाविद्यालयों एवं विश्व संवाद केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में 'महिला अधिकार एवं न्याय' पर ऑनलाइन संगोष्ठी आयोजित

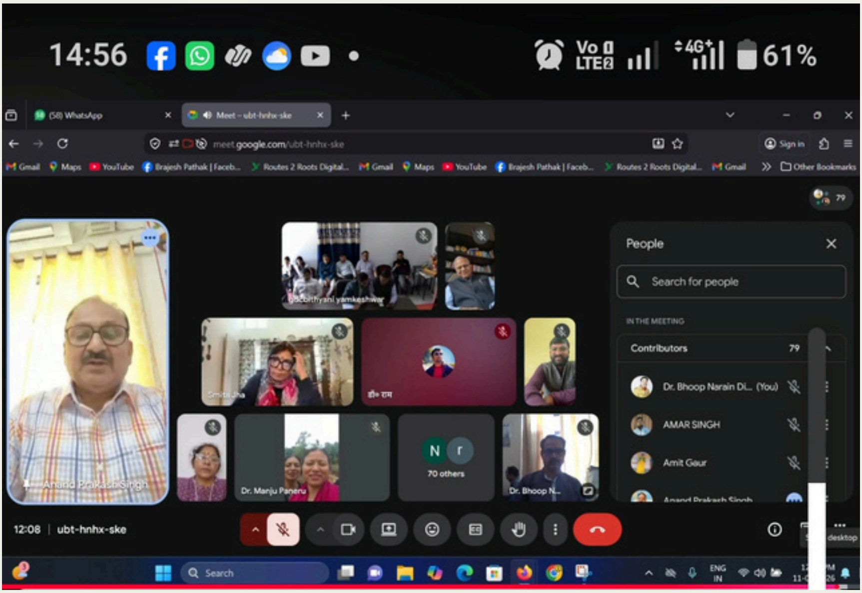

08 मई 2026

महाविद्यालय में विश्व रेडक्रास दिवस का आयोजन

सुर्ख़ियों में महाविद्यालय

नि:शुल्क मौन पालन प्रशिक्षण को आवेदन शुरू

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं और स्थानीय निवासियों के लिए 21 दिवसीय नि:शुल्क मौन पालन प्रशिक्षण का शीघ्र ही आयोजन किया जाएगा। महाविद्यालय द्वारा छात्र-छात्राओं और स्थानीय युवाओं को स्वरोजगार की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए एक अभिनव पहल की गई है।

महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं और स्थानीय निवासियों के लिए शीघ्र ही पैलाग फाउंडेशन, अल्मोड़ा द्वारा 21 दिवसीय मौन पालन प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम के लिए पंजीकरण की प्रक्रिया प्रारंभ हो चुकी है। आवेदन करने की अंतिम तिथि 7 अप्रैल निर्धारित की गई है। उक्त प्रशिक्षण पूर्णत: नि:शुल्क है, जिसका उद्देश्य पर्वतीय क्षेत्रों के युवाओं को स्वरोजगार के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाना है। स्थानीय निवासियों के लिए अधिकतम आयु 28 वर्ष तय की गई है। पंजीकरण के समय चार पासपोर्ट साइज फोटो, आधार कार्ड, वोटर कार्ड, पैन कार्ड, हाईस्कूल व इंटरमीडिएट प्रमाण पत्र, पैन कार्ड और बीपीएल कार्ड की छायाप्रति लाना अनिवार्य है। 21 दिनों तक चलने वाले इस प्रशिक्षण में विशेषज्ञों द्वारा मधुमक्खी पालन की वैज्ञानिक बारीकियों, शहद के प्रसंस्करण और विपणन का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया जाएगा। महाविद्यालय की प्राचार्य प्रो. शर्मिला सक्सेना ने स्थानीय निवासियों व महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं से इस सुनहरे अवसर का लाभ उठाने की अपील की है। अभ्यर्थी पंजीकरण हेतु महाविद्यालय की कौशल विकास समिति से संपर्क कर सकते हैं।

डॉ. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण के छात्र-छात्राओं के लिए 'प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना' के तहत सुनहरा अवसर

वीएनसी मीडिया 3 अप्रैल 2026
उत्तराखंड : डॉ एसआर चंन्द्रा

NEWS
नयी दुनिया। नए समाचार।
VNC MEDIA CHANDIGARH

भिकियासैंण। डा.प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में वर्तमान में अध्ययनरत एवं उत्तीर्ण हुए छात्र-छात्राओं के लिए प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना के अंतर्गत देश की प्रतिष्ठित कंपनियों में इंटर्नशिप करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया जा रहा है।प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना का तृतीय चरण दिनांक 20 मार्च 2026 से प्रारंभ हो चुका है।इस योजना का लाभ उठाने के लिए आवेदक की आयु 18 से 25 वर्ष के बीच होनी चाहिए।चयनित अभ्यर्थियों को इंटर्नशिप के दौरान ₹9000 6 से 9 माह तक आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी।इच्छुक छात्र-छात्राएं योजना के आधिकारिक पोर्टल पर जाकर अपना पंजीकरण करा सकते हैं। आवेदन करने हेतु आधिकारिक लिंक है- https://pminternship.mca.gov.in है। महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ. राजीव कुमार ने उक्त सूचना देते हुए बताया कि छात्र-छात्राएं समय रहते ऊपर दिए गए लिंक पर अपनी पंजीकरण प्रक्रिया पूर्ण करें और इस कौशल विकास योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाएं।

शिक्षा / Leave a Comment

राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में मनाया गया विश्व रेडक्रॉस दिवस।

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। डॉ. प्रताप सिंह राजकीय महाविद्यालय भिकियासैंण में महाविद्यालय की यूथ रेड क्रॉस सोसाइटी के तत्वावधान में विश्व रेडक्रॉस दिवस मनाया गया। इस अवसर पर "यूनाइटेड इन ह्यूमैनिटी" विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता के रूप में पार्ट एंड लेक्चरर अल्मोड़ा चंद्र किशोर ने रेड क्रॉस सेवकों एवं छात्र छात्राओं को संबोधित करते हुए रेडक्रॉस के सिद्धांतों, उद्देश्यों एवं मानव सेवा के महत्व पर विस्तृत व्याख्यान दिया। विश्व रेडक्रॉस दिवस के अवसर पर उन्होंने रेड क्रॉस के जनक हेनरी डयूनेन्ट के जीवन परिचय पर प्रकाश डाला तथा उनकी प्रसिद्ध पुस्तक "ए मेमोरी ऑफ सोल्फेरीनो" के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

व्याख्यान के दौरान रेड क्रॉस के सिद्धांतों एवं मूल्यों पर चर्चा करते हुए रेड क्रॉस के चिन्ह के महत्व और उसकी विशेषताओं का भी वर्णन किया गया। इस वर्ष की थीम "United in Humanity" पर विशेष बल देते हुए रेड क्रॉस स्वयंसेवकों को मानवता के सिद्धांत के अनुसार बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक व्यक्ति की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहने का संदेश दिया गया।

रेड क्रॉस स्वयंसेवकों से आह्वान किया गया कि "मानवता ही परम धर्म है" और रेड क्रॉस स्वयंसेवक मानव सेवा के लिए सदैव समर्पित रहें।

कार्यक्रम के दौरान मुख्य वक्ता द्वारा रेड क्रॉस विषय पर एक क्विज प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में अदिति (बीए चतुर्थ सेमेस्टर) ने प्रथम, सिमरन गोस्वामी (बीए चतुर्थ सेमेस्टर) ने द्वितीय तथा प्रतीक कांडपाल (बीए तृतीय सेमेस्टर) ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

कार्यक्रम महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना के मार्गदर्शन में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डॉ. विभूनाथ पांडे ने की, जबकि संचालन डॉ. इला बिष्ट, यूथ रेडक्रॉस प्रभारी द्वारा किया गया।

इस अवसर पर महाविद्यालय के रेड क्रॉस स्वयंसेवक, विद्यार्थी, प्राध्यापक एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

रिपोर्टर – रिया सोलीवाल

Share this post:

Contact us

08 अप्रैल 2026 (अमर उजाला)

शतरंज में सुमित, सिमरन ने सबको मात दे जीती स्पर्धा

भिकियासैंण महाविद्यालय में हुआ क्रीड़ा महोत्सव का आयोजन

संवाद न्यूज एजेंसी

city sports

अल्मोड़ा। भिकियासैंण महाविद्यालय में आयोजित क्रीड़ा महोत्सव में खिलाड़ियों ने अपना हुनर दिखाया। प्रतियोगिता के विजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। मंगलवार को हुई कैरम प्रतियोगिता के पुरुष वर्ग में योगेश बिष्ट और महिला वर्ग में सान्या ने बाजी मारी।

शतरंज प्रतियोगिता के पुरुष वर्ग में सुमित बिष्ट और महिला वर्ग में सिमरन विजेता रही। वहीं टेबल टेनिस प्रतियोगिता के महिला वर्ग में सपना और पुरुष वर्ग सुमित बिष्ट ने पहला स्थान पाया। प्राचार्य डॉ. शर्मिला सक्सेना ने विद्यार्थियों में खेल भावना के साथ बेहतर प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया।

यहां क्रीड़ा प्रभारी डॉ. राजीव कुमार, डॉ. सुभाष चंद्र आर्या, डॉ. परितोष उप्रेती, भुवन कबड़वाल, डॉ. इला बिष्ट, डॉ. वीएन पांडेय, डॉ. कौशल कुमार अग्रवाल सहित विद्यार्थी मौजूद रहे।

कैरम प्रतियोगिता में प्रतिभाग करतीं छात्राएं। स्रोत: जागरूक पाठक

उजाला 11 अप्रैल 2026

क्रीड़ा महोत्सव में प्रतिभागियों ने दिखाई प्रतिभा

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में आयोजित क्रीड़ा महोत्सव का द्वितीय एवं अंतिम दिवस उत्साहपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ। समापन अवसर पर मुख्य अतिथि अटल उत्कर्ष राजकीय इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य बीआर भारती रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डा. बीएन पाण्डेय ने की।

क्रीड़ा प्रभारी डा. राजीव कुमार के निर्देशन में कार्यक्रम आयोजित हुआ, जबकि विशिष्ट अतिथि के रूप में राजेन्द्र सिंह मनराल उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि प्रधानाचार्य बीआर भारती ने विजेता प्रतिभागियों को शुभकामनाए देते हुए खेलों के महत्व पर प्रकाश डाला। अंतिम दिवस पर विभिन्न एथलेटिक्स प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें छात्र-छात्राओं ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। लंबी कूद छात्रा वर्ग में सुषमा ने प्रथम, कविता ने द्वितीय तथा दीपा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वहीं छात्र वर्ग में प्रवेश ने प्रथम, विपिन बिष्ट ने द्वितीय तथा मनीष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। ऊंची कूद छात्रा वर्ग में सुषमा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया, रूपा द्वितीय तथा दीपा तृतीय स्थान पर रहीं। छात्र वर्ग में विपिन ने प्रथम, मनीष ने द्वितीय तथा नितिन ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 200 मीटर दौड़ छात्रा वर्ग में सोनाक्षी प्रथम, सुषमा द्वितीय तथा रूपा तृतीय स्थान पर रहीं। छात्र वर्ग में त्रिभुवन ने प्रथम, प्रवेश ने द्वितीय तथा मनीष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। 100 मीटर दौड़ छात्रा वर्ग में कविता ने प्रथम, रूपा ने द्वितीय तथा हिमानी ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। छात्र वर्ग में योगेश ने प्रथम, प्रवेश ने द्वितीय तथा मनीष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया।

डा. इला बिष्ट, अजय पाण्डेय, डा. परितोष उप्रेती, महेश बलोदी, योगेश भट्ट, प्रदीप कुमार, सतीश, पूरन जलाल, गौरव कुमार आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

अमर उजाला 06 अप्रैल 2026

प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना का लाभ लेने की अपील

भिकियासैंण। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में वर्तमान में अध्ययनरत एवं उत्तीर्ण हुए छात्र-छात्राओं के लिए प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना के अंतर्गत देश की प्रतिष्ठित कंपनियों में इंटर्नशिप करने का एक महत्वपूर्ण अवसर प्रदान किया जा रहा है। प्रधानमंत्री इंटर्नशिप योजना का तृतीय चरण 20 मार्च से प्रारंभ हो चुका है। इस योजना का लाभ उठाने के लिए आवेदक की आयु 18 से 25 वर्ष के बीच होनी चाहिए। चयनित अभ्यर्थियों को इंटर्नशिप के दौरान 9000 रुपए की 6 से 9 माह तक आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी। इच्छुक छात्र-छात्राएं योजना के आधिकारिक पोर्टल पर जाकर अपना पंजीकरण करा सकते हैं। महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डा. राजीव कुमार ने बताया कि छात्र-छात्राएं समय रहते अपनी पंजीकरण प्रक्रिया पूर्ण करें और इस कौशल विकास योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाएं।

उत्तर उजाला 03 अप्रैल 2026

छात्रों को स्वरोजगार के लिए किया प्रेरित

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। डा. प्रताप बिष्ट राजकीय महाविद्यालय में बुधवार को देवभूमि उद्यमिता अभिविन्यास कार्यक्रम 2026 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य छात्र-छात्राओं में उद्यमिता की भावना विकसित करना तथा उन्हें स्वरोजगार एवं स्टार्टअप के अवसरों के प्रति जागरूक करना रहा।

कार्यक्रम में मुख्य वक्ता एवं विशेषज्ञ के रूप में महेंद्र सिंह रौतेला, परियोजना अधिकारी देवभूमि उद्यमिता योजना, अल्मोड़ा उपस्थित रहे। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि देवभूमि उद्यमिता योजना उत्तराखंड सरकार के उच्च शिक्षा विभाग के अंतर्गत संचालित एक महत्वपूर्ण पहल है, जिसका उद्देश्य युवाओं को अपने व्यावसायिक विचारों को सफल व्यवसाय में बदलने के लिए मार्गदर्शन एवं प्रशिक्षण प्रदान करना है। उन्होंने विद्यार्थियों को बताया कि किस प्रकार वे अपने नवाचारपूर्ण विचारों को स्टार्टअप के रूप में विकसित कर सकते हैं तथा आत्मनिर्भर बन सकते हैं। योजना के अंतर्गत युवाओं को प्रशिक्षण, मेंटरशिप, बूट कैंप, बिजनेस प्लान मार्गदर्शन तथा स्टार्टअप सहायता जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं।

कार्यक्रम के संयोजक डा. राजीव कुमार रहे, जबकि संचालन डा. सुभाष चंद्र आर्या ने किया। महाविद्यालय के प्रभारी प्राचार्य डा. गौरव कुमार ने मुख्य वक्ता महेंद्र सिंह रौतेला का स्वागत करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों के भविष्य निर्माण में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं। इस मौके पर डा. दिनेश कुमार, डा. परितोष उप्रेती, डा. इंदिरा तथा अजय पाण्डेय सहित अन्य सभी शिक्षक एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

12 अप्रैल 2026 उत्तर उजाला

महिला अधिकार एवं न्याय पर संगोष्ठी में महत्वपूर्ण चर्चा

भिकियासैंण (अल्मोड़ा)। भिकियासैंण, नबसा, मौठीबेरी, विध्याणी राजकीय हाविद्यालयों और विश्व संवाद केंद्र के संयुक्त त्वावधान में महिला अधिकार एवं न्याय विषय पर क दिवसीय ऑनलाइन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह संगोष्ठी डॉ. भीमराव अंबेडकर की यंती के उपलक्ष्य में आयोजित की गई, जिसमें याय, आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक न्याय के संदर्भ में महिलाओं के अधिकारों पर महत्वपूर्ण र्चा हुई। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता आईआईटी ड़की के मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग की विभागाध्यक्ष प्रो. स्मिता झा रहीं। उन्होंने अपने याख्यान में महिलाओं के संवैधानिक अधिकारों र विस्तार से प्रकाश डाला और कहा कि जब तक हिलाएं आर्थिक और सामाजिक रूप से सुदृढ़ नहीं ोंगी, तब तक न्याय की संकल्पना अधूरी रहेगी।

प्रो. स्मिता झा ने भारतीय संविधान द्वारा हिलाओं को दिए गए विशेष सुरक्षा अधिकारों और विभिन्न अधिनियमों के बारे में भी जानकारी साझा की। उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि शिक्षा के माध्यम से [illegible] जरूरी है, ताकि वे अपने अधिकारों का पूरी तरह से उपयोग कर सकें और समाज में अपने योगदान को सही तरीके से निभा सकें। कार्यक्रम का आयोजन महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफेसर शर्मिला सक्सेना की देखरेख में किया गया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार के आयोजन न केवल छात्र-छात्राओं के बौद्धिक विकास में मदद करते हैं, बल्कि उन्हें समाज की ज्वलंत समस्याओं के प्रति जागरूक भी बनाते हैं। इस ऑनलाइन संगोष्ठी में भिकियासैंण, बनबसा, मौठीबेरी और विध्याणी महाविद्यालयों के प्राध्यापक, शोधार्थी और छात्र-छात्राओं सहित लगभग 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के अंत में मुख्य वक्ता ने प्रतिभागियों के प्रश्नों का उत्तर भी दिया। संचालन और धन्यवाद ज्ञापन आयोजन समिति के सदस्यों ने किया।

मीमांसा

उत्तराखण्ड के लोक देवता

उत्तराखण्ड के लोक देवता पढ़ते समय ऐसा महसूस होता है जैसे हम उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति, परंपराओं और आस्थाओं के बहुत करीब पहुँच गए हों। लेखक डी. डी. शर्मा ने इस पुस्तक में उत्तराखण्ड के विभिन्न लोक देवताओं से जुड़ी मान्यताओं, कथाओं और लोकविश्वासों को सरल और रोचक ढंग से प्रस्तुत किया है।

यह पुस्तक केवल धार्मिक जानकारी तक सीमित नहीं है, बल्कि उत्तराखण्ड के लोगों के जीवन, उनकी संस्कृति और उनकी पहचान को भी समझने का अवसर देती है। पुस्तक में वर्णित लोक देवताओं के बारे में पढ़कर यह एहसास होता है कि किस प्रकार ये देवता आज भी लोगों की आस्था और दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा हैं।

लेखक की भाषा सहज और सरल है, जिससे पाठक बिना किसी कठिनाई के विषय को समझ सकता है। विशेष रूप से उत्तराखण्ड की लोक परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत में रुचि रखने वाले पाठकों के लिए यह पुस्तक अत्यंत उपयोगी और ज्ञानवर्धक सिद्ध होती है।

कुल मिलाकर, उत्तराखण्ड के लोक देवता एक ऐसी पुस्तक है जो पाठक को उत्तराखण्ड की समृद्ध लोक संस्कृति और धार्मिक परंपराओं से परिचित कराती है। यह पुस्तक न केवल जानकारी देती है, बल्कि अपनी सांस्कृतिक जड़ों को समझने और उनसे जुड़ने की प्रेरणा भी प्रदान करती है।

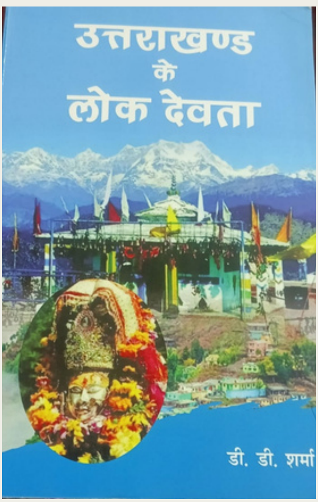

सम्पादक- डॉ0 इन्दिरा
असि0 प्रो0 भौतिक विज्ञान

महाविद्यालय परिवार

प्राचार्य

प्रो॰ (डॉ॰) शर्मिला सक्सेना

प्राध्यापक वर्ग

अर्थशास्त्र विभाग

डॉ॰ विश्वनाथ पाण्डेय

(असि॰ प्रोफेसर)

हिन्दी विभाग

डॉ॰ सुभाष चन्द्र आर्य

(असि॰ प्रोफेसर)

राजनीति विज्ञान विभाग

डॉ॰ दिनेश कुमार

(असि॰ प्रोफेसर)

इतिहास विभाग

डॉ॰ दीपा लोहनी

(असि॰ प्रोफेसर)

समाजशास्त्र विभाग

डॉ॰ इला बिष्ट

(असि॰ प्रोफेसर)

अंग्रेजी विभाग

डॉ॰ कौशल कुमार

(असि॰ प्रोफेसर)

भूगोल विभाग

डॉ॰ पारितोष उप्रेती

(असि॰ प्रोफेसर)

वाणिज्य विभाग

डॉ॰ गौरव कुमार

(असि॰ प्रोफेसर)

डॉ॰ राजीव कुमार

(असि॰ प्रोफेसर)

वनस्पति विज्ञान विभाग

डॉ॰ सोनम

(असि॰ प्रोफेसर)

जन्तु विज्ञान विभाग

डॉ॰ दयाकृष्ण

(असि॰ प्रोफेसर)

रसायन विज्ञान विभाग

डॉ॰ साविर हुसैन

(असि॰ प्रोफेसर)

भौतिकी विज्ञान विभाग

डॉ॰ इंदिरा

(असि॰ प्रोफेसर)

कार्यालय

श्री गौरव कुमार
(कनिष्ठ लिपिक)

श्री प्रदीप कुमार (उपनल)
(कनिष्ठ लिपिक)

प्रयोगशाला सहायक

श्री बिरेन्द्र राम
(जन्तु विज्ञान)

श्री शेरसिंह
(भौतिक विज्ञान)

श्री विनोद कबडवाल
(वनस्पति विज्ञान)

श्री योगेश भट्ट
(रसायन विज्ञान)

अनुसेवक

श्री पूरन जलाल (उपनल)

श्री श्याम सुन्दर (उपनल)

श्री सुरेश कुमार (उपनल)

श्री सतीश कुमार (उपनल)

Info Desk

College Website- https://gdcbhikiyasain.in/

College Fb ID- https://www.facebook.com/photo/?fbid=525965566878099&set=a.525965573544765

College Youtube - UCV7z6yOzKf2rhW4jz9qzBfA

SSJU Website- https://www.ssju.ac.in/

Routes to Roots- https://r2rdigital.routes2roots.com/

Skill Development Programme-
https://www.msde.gov.in/

Anti-Ragging-
https://www.antiragging.in/affidavit_affiliated_form.php

Anti Drug-
https://pledge.mygov.in/fightagainstdrugabuse/